classmate
Date
Page

B.A. Part-I, Paper - I
Lecture - 24

Dr. Sunita Kumari, Assistant Professor
Marwari college Darbhanga.

Date
13/5/20

TOPIC सामाजिक संरचना और इसके तत्व.

Scanned by CamScanner

मुख्य तत्वों की विवेचना करें।

Ans - सामाजिक संरचना की अवधारणा समाजशास्त्रीय साहित्य में मुख्यतः प्रकार्यवादी विचारधारा की देन है। वैसे तो प्रारंभिक समाजशास्त्री Comte, Spencer, Marx आदि के लेखों में भी संरचना शब्द का प्रयोग होता रहा है, परन्तु समाजशास्त्रीय एवं वैज्ञानिक अवधारणा के रूप में इसका प्रयोग मुख्यतः प्रकार्यवादीयों के द्वारा ही किया गया। प्रकार्यवादियों की मान्यता ये है कि किसी जीवित प्राणी का शरीर जैसे जैविकीय व्यवस्था है इसी प्रकार मानव समाज भी एक व्यवस्था है जिसकी संरचना का निर्माण जैविकीय संरचना की तरह ही विभिन्न अन्तः सम्बन्धित इकाइयों से होता है। इस प्रकार सामाजिक संरचना का ऐसे सामाजिक होने का बोध कराता है जिसका निर्माण अन्तः सम्बन्धित इकाइयों से होता है, तथा जिनमें कुछ हद तक स्थिरता पाई जाती है।

सामाजिक संरचना की अवधारणा को परिभाषित करते हुए Prof. Smelser का कहना है कि - "Social structure can be defiened as identifible patterns of roles that are organised primarily around the fulfilment of some social functions or activities." अर्थात Smelser के कथानुसार सामाजिक संरचना मुख्यतः अन्तः सम्बन्धित इकाइयों से निर्मित होती हैं जो कि समाज के कुछ खास उद्देश्यों की पूर्ति करती हैं इस परिभाषा के अनुसार किसी भी सामाजिक संरचना की मूल मूल इकाई सामाजिक भूमिकाएं होती हैं जो समाज के विभिन्न लक्ष्यों की पूर्ति करते हैं। इस दृष्टि से अगर हम मानव परिवार की संरचना

का विश्लेषण करते हैं तो यह पाते हैं कि किसी भी मानव परिवार का निर्माण विभिन्न प्रस्थितियों एवं भूमिकाओं जैसे पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री आदि से होती है जो अपनी भूमिकाओं को निभाते हुए समाज की कुछ मौलिक आवश्यकताओं जैसे - सामाजिकता, संस्कृति के हस्तान्तरण आदि की पूर्ति करते हैं। परन्तु इस परिभाषा को पूर्णतः वैज्ञानिक नहीं माना जा सकता है क्योंकि संरचना के निर्माणक सिर्फ सामाजिक भूमिकाएं ही नहीं होती, बल्कि सामाजिक भूमिकाओं के अतिरिक्त सामाजिक नियम, सामाजिक मूल्य, समूह एवं उपसमूह आदि सामाजिक संरचना के तत्व हैं।

Prof. Johnson ने सामाजिक संरचना की एक वैज्ञानिक परिभाषा दी है जिसमें सामाजिक संरचना के सभी मूल तत्वों तथा इसकी प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख किया गया है। उन्हीं के शब्दों में:- "The structure of anything consists of relatively stable inter relationships among the parts, moreover, the term part itself implies a certain degree of stability." अर्थात् सामाजिक संरचना विभिन्न इकाइयों के बीच पाए जाने वाले तुलनात्मक रूप से स्थिर संबंधों के प्रतिमान को कहा जाता है एवं स्वयं इकाई भी कि संरचना का निर्माण करते हैं तथा इकाइयों के बीच पाए जाने वाला सम्बन्ध भी बहुत हद तक स्थिर होते हैं।

सामाजिक संरचना की इकाइयों की व्यापक चर्चा करते हुए JOHNSON महोदय ने इसकी चार प्रमुख इकाइयों की चर्चा की है जो निम्न है।

1): समूह या उपसमूह (Group or Sub-Group)

जब हम किसी वृहत्तर सामाजिक व्यवस्था की संरचना का विश्लेषण करते हैं तो इसकी प्रथम इकाई रूप में इस व्यवस्था में पाए जाने वाले विभिन्न

समूह एवं उपसमूहों का उल्लेख किया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप जिस प्रकार हम किसी विश्वविद्यालय की संरचना का विश्लेषण कर रहे हैं तो उस विश्वविद्यालय में पाए जाने वाले विभिन्न महाविद्यालय "समूह" के उदाहरण हुए एवं विभिन्न महाविद्यालय में पाए जाने वाले भिन्न भिन्न विभाग "उपसमूह" के उदाहरण हुए। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि जिस प्रकार हम परिवार जैसे किसी छोटे समूह की संरचना का विश्लेषण करते हैं तो उसमें आवश्यक रूप से समूह या उपसमूह पाए जाए यह आवश्यक नहीं है। क्योंकि स्वयं परिवार वृहत्तर सामाजिक व्यवस्था का एक छोटा सा समूह है।

(2) भूमिकाएँ (Roles) – सामाजिक संरचना का दूसरा अति महत्वपूर्ण तत्व अन्तः संबंधित भूमिकाएँ हैं, कुछ विद्वानों ने भूमिकाओं को ही सामाजिक संरचना की सबसे छोटी एवं सबसे महत्वपूर्ण इकाई माना है, समाजशास्त्र में भूमिका की अवधारणा भी पद या परिस्थिति (Status) की अवधारणा से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है, किसी समूह के सदस्य होने के नाते एक व्यक्ति को उस समूह में जो स्थान प्राप्त होता है, उसे 'परिस्थिति' कहा जाता है; जबकि उस परिस्थिति से संबंधित सदस्य के उत्तरदायित्व एवं कार्यों को 'भूमिका' (Roles) कहा जाता है। किसी भी सामाजिक संरचना का विश्लेषण करने से यह सुस्पष्ट हो जाता है कि वह संरचना विभिन्न अन्तः संबंधित भूमिकाओं से ही निर्मित हुआ है। उदाहरणस्वरूप – एक महाविद्यालय की संरचना विभिन्न अन्तः सम्बन्धित भूमिकाएँ जैसे – प्राध्यापक, छात्राएँ, छात्र एवं लिपिक/कलर्क कर्मचारियों की भूमिकाओं से निर्मित होती है, साथ ही ये भूमिकाएँ अपने अस्तित्व को लिए एवं व्यवस्था को कायम रखने के लिए एक दूसरे से अन्तः

सम्बन्धित एक दूसरे पर आश्रित हैं।

(3.) नियम (Norms) - सामाजिक संरचना का तीसरा महत्वपूर्ण तत्व नियम है। ये नियम ही किसी सामाजिक पद पर आसीन व्यक्ति की भूमिकाओं तथा इन भूमिकाओं के बीच अन्तः संबंध को निर्धारित एवं निर्देशित करती हैं। उदाहरणस्वरूप पारिवारिक जीवन में पाए जाने वाले नियम, पति-पत्नी, पिता-पुत्र, भाई-बहन के बीच अन्तः सम्बन्ध को निर्धारित एवं निर्देशित करती है, साथ ही इस तथ्य को भी निर्धारित करती है कि एक सामाजिक पद पर आसीन व्यक्ति की विभिन्न परिस्थितियों में क्या भूमिका होगी। इस प्रकार ये नियम भूमिकाओं को बाँधने में और संरचना को स्थायित्व प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

मूल्य (Value) - सामाजिक संरचना का चौथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व मूल्य है। मूल्य से हमारा तात्पर्य वैसे समाज द्वारा स्वीकृत मानकों से है, जिन्हें हम अच्छा, सही या वांछनीय मानते हैं और जिसके आधार पर हम समूह के सदस्य, उनके कार्य या अन्य प्रकार की सामाजिक वस्तुओं का मूल्यांकन करते हैं। इस प्रकार मूल्य सामाजिक पैमाना है, जिसके आधार पर सभी प्रकार के सामाजिक तत्वों का मूल्यांकन करते हैं। उदाहरणस्वरूप - "ईमानदारी" एक मूल्य है जिसके आधार पर हम व्यक्ति एवं उसके कार्यों का सही एवं गलत इस रूप में उसका मूल्यांकन करते हैं। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि मूल्य एवं नियम के बीच घनिष्ठ संबंध है और यह सम्बन्ध इतना घनिष्ठ है कि कभी-कभी इसके बीच स्पष्ट अन्तर स्थापित करना कठिन हो जाता है। Johnson ने मूल्यों को "Higher form of norms" कहा है। मूल्य ही सामाजिक नियम के

Scanned by CamScanner